भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर के अध्यक्ष डॉ.चिदम्बरम का शॉल ओढ़ाकर सम्मान करते हुए दादी जी।

तत्कालीन केन्द्रीय रक्षामंत्री जार्ज फर्नांडीज, दादी प्रकाशमणि से सामयिक विषयों पर चर्चा करते हुए।

भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री एच.डी.देवगौड़ा, डॉ.मनमोहन सिंह, दादी प्रकाशमणि, दादी हृदयमोहिनी तथा दादी जानकी।

पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल वीरेन शाह का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

जाम्बिया के पूर्व राष्ट्रपति डॉ.कानेट कौड़ा का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि एवं दादी जानकी।

मॉरीशस के राष्ट्रपति मिस्टर कासिम उत्तम के साथ कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

15 सितम्बर, 1987 : अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के दौरान ब्रह्माकुमारी संस्था की विशिष्ट सेवाओं के सम्मानार्थ संयुक्त राष्ट्र के अपर महासचिव वेसीली एस.सैफ्रांचक, दादी प्रकाशमणि को अंतर्राष्ट्रीय शान्ति दूत पुरस्कार से सम्मानित करते हुए।

दादी विनम्रता.... -पेज 2 का शेष

होता था कि उसने कोई एक्सट्रा सेवा की हो। हमने यह अनुभव किया कि दादीजी के निर्णय में परमात्मा की शक्ति की झलक स्पष्ट देखने को मिलती थी।

दादीजी लगभग हर तीन-चार दिन में ज्ञानसरोवर के निर्माण कार्य को देखने आती थी। वह जब भी आती थी तो सभी के लिए कुछ न कुछ लेकर ही आती थी और सभी को बहुत ही प्यार से खिलाती थी जैसे कभी टोली, तो कभी कोई फल इत्यादि..।

दादीजी के मुख से जो निकला वह पूर्ण हो ही जाता था। जैसे दादीजी ने कहा कि अब ब्रह्माकुमारीज़ के प्रोग्राम में लाखों लोग आने चाहिए। उस समय सर्वप्रथम अहमदाबाद के प्रोग्राम में लाखों लोग आये थे और फिर तो सब जगह हिम्मत, उमंग-उत्साह और विश्वास से सेवा होने लगी। चारों ओर ऐसे प्रोग्रामों का सिलसिला चल पड़ा। सचमुच दादीजी सिद्धि स्वरूप नजर आती थी।

दादीजी की परख शक्ति इतनी स्पष्ट थी कि जिसमें जो योग्यता होती थी उसे परखकर उसे उसी कार्य में लगा देती थी। मुझे एक बार कहा आप मधुबन निवासी बनकर रहेंगे। उस समय मैं घर में अकेला ज्ञान में चलता था और पारिवारिक बंधन भी बहुत था लेकिन दादीजी ने कहा और आज मैं आपके सामने हूँ। कैसे उनके बोल हरेक के लिए वरदानी सिद्ध हो जाते थे।

दादीजी के पास जाने में किसी को कभी भी हिचक महसूस नहीं होती थी। एक बार मैं दादीजी से मिलने गया क्योंकि उसी समय मुझे उनसे मिलकर बाहर जाना था। जैसे ही उनकी दृष्टि मुझ पर पड़ी तो उन्होंने मुझे अंदर बुला लिया और हाल-समाचार पूछकर मुझे कार्य की प्रेरणा दी और सैलवेशन देकर अग्रसर कर दिया। इतनी बड़ी दादी और इतना सरल हृदय, यह मेरे जीवन का सबसे अनोखा अनुभव था।

दादीजी का क्लास के बाद पाण्डव भवन में बैठना और सबको वरदानी, स्नेही दृष्टि से पूचकारना, उनका यह सरल व्यक्तित्व सबके दिल में अमिट जगह बना लेता था। दादीजी के विशाल हृदय का तो पूछना ही क्या, चाहे जितने भी लोग आ जायें दादी सबको मिलती थी और सबसे हाल समाचार लेती थी। आप मधुबन में आये और दादी न मिले ऐसा कभी नहीं हुआ। दादीजी के जीवन में असंभव नाम का शब्द कभी दिखाई नहीं दिया। जो संकल्प आया वह पूर्ण होता गया। सन् 1987 में कुमारों की भट्ठी 'ओम शांति भवन' में थी। उस समय बरसात का मौसम था और बारिश भी अच्छी हो रही थी। करीब 1500 कुमार थे उस तपस्या भट्ठी में। दादीजी ने सत्यता की शक्ति के ऊपर साढ़े तीन घण्टे क्लास करवाया। तब मुझे यह अनुभव हुआ कि सत्यता की शक्ति का हमारे जीवन में कितना महत्व है। छोटी-मोटी भूल से हमारे जीवन में कितना नुकसान होता है इस पर प्रकाश डाला। उनके कहने का ढंग, उनके दिल का निश्छल स्नेह ने सबको सत्यता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा व शक्ति दी। आज भी वह दिन मैं भूल नहीं पाता हूँ। अगर दादीजी के बारे में यूं कहें कि भगवान ने फुरसत के पल में दादी को बनाया है, तो गलत न होगा। क्योंकि दादीजी हर दिव्यता, हर शक्ति की दिव्यमूर्त थीं और भगवान को भी उन पर नाज था। सचमुच जीवन हो तो ऐसा हो....।

सतो, रजो व तमो तीन प्रकार के सुख हैं

सबसे श्रेष्ठ शक्ति है धारणा की। जिसका अपनी इंद्रियों के ऊपर सम्पूर्ण अधिकार है और योगाभ्यास द्वारा उस अधिकार को प्राप्त किये हुए हैं। इस प्रकार फिर अर्जुन को तीन प्रकार के सुखों की व्याख्या की है। हे अर्जुन, तीन प्रकार के सुख का वर्णन सुन। अर्थात् सबसे पहले त्याग और सन्यास की बात बतायी, उसके बाद ज्ञान तीन प्रकार का, कर्म तीन प्रकार का, कर्त्ता तीन प्रकार के, साथ ही साथ बुद्धि तीन प्रकार की, धारणा शक्ति तीन प्रकार की और उसके फलस्वरूप तीन प्रकार के सुख का वर्णन सुनाने के लिए भगवान कहते हैं जिसमें रमण करने से मनुष्य प्रसन्न रहता है और जिससे दु:ख का अंत होता है।

जो सुख आरंभ में विष के समान है अर्थात् जब मनुष्य मेहनत करता है तो मेहनत में उसको कठिनाई का अनुभव होता है। आरंभ में कठिनाई अनुभव होती हो परंतु परिणाम में अमृत के समान है वह आत्मस्वरूप में समाहित बुद्धि, प्रसन्नता, निर्मलता, स्थिरता का सुख, अनुभव करती है, वह सतोगुणी सुख है।

दूसरे प्रकार का जो सुख है राजसी सुख। जो सुख विषय और इंद्रियों के संयोग से उत्पन्न होता है। वह प्रथम तो अमृत समान अनुभव होता परंतु परिणाम में विष तुल्य होता है, वह सुख राजसी सुख है।

जो सुख आत्मोन्नति के प्रति अंधा, प्रारंभ से लेकर अंत तक मोहग्रस्त है और जो आलस्य, निंद्रा और प्रमाद से उत्पन्न होता है, वह तामसी सुख है। आलसी व्यक्ति सारा दिन अगर बिस्तर पर पड़ा रहता है, तो वह सुख का अनुभव करता है, लेकिन वह सुख तो तामसी सुख है। तो इस प्रकार, तीन प्रकार के सुख का अनुभव मनुष्य करता है। फिर भगवान ने कहा - पृथ्वी पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में प्रकृति के गुणों के अनुसार ये स्वभाव द्वारा, उत्पन्न गुणों के द्वारा भेद किया जाता है। जैसा जिसका स्वभाव होता है, उस स्वभाव के अनुसार ही भेद किया जाता है। पृथ्वी पर अथवा स्वर्ग के

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

देवताओं में ऐसा कोई प्राणी नहीं है, जो प्रकृति से उत्पन्न इन तीन गुणों से मुक्त हो। तीन गुण कहां न कहां किसी में किस परसेंटेज में और किसी में कौन सा और किसी में कौन सा अधिक रहता है।

पुरूषार्थ का मतलब ही यह है। पुरूषार्थ माना पुरूष और अर्थ। पुरूष अर्थात् आत्मा। आत्मा की उन्नति अर्थ जितना हम सात्विक प्रकृति को विकसित करते जाते हैं, इसी का नाम पुरूषार्थ है। यह पुरूषार्थ भगवान अर्जुन को भी करने के लिए कहता है और उसे प्रेरित करता है। उसके लक्षण बताए कि चारों वर्ण के लक्षण कौन से हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के। तो शांति प्रियता, आत्मसंयम, तपस्या, पवित्रता, क्षमा भाव, सरलता, सत्यनिष्ठ, ज्ञान-विज्ञान तथा धार्मिकता ये सारे स्वाभाविक गुणों द्वारा ब्राह्मण कर्म करता है। ये ब्राह्मणों के कर्म करने का आधार है।

क्षत्रियों के कर्म करने का आधार कौन सा? वीरता, शक्ति, संकल्प दक्षता, युद्ध में धैर्य, उदारता तथा नेतृत्व ये क्षत्रियों के स्वाभाविक गुण हैं। वैश्यों के गुण कौन से हैं ? कृषि करना, गौ रक्षा तथा व्यापार, ये वैश्यों के स्वाभाविक कर्म होते हैं। शूद्र कर्म हैं - श्रम तथा अन्य की सेवा करना। आज भले जन्म से इंसान कैसा भी हो? जन्म से कोई ब्राह्मण हो लेकिन अगर उसके कर्म शूद्र के समान हों, तो वो उसी श्रेणी में माना जाता है।

भावार्थ ये है कि हम अपने आपकी जितनी उन्नति करना चाहें उतनी उन्नति कर सकते हैं। गौ रक्षा, कृषि करना, व्यापार ये वैश्य का स्वाभाविक गुण है। व्यापार माना हर बात में बिजनेस होता है। तुम मेरे लिए इतना करो तो मैं तेरे लिए इतना करूंगा। ये भी एक व्यापार है। जहां हम कर्म में भी हिसाब लगाने लगते हैं। मैंने इतना किया तो तुम भी इतना करो, ये हिसाब-किताब नहीं तो क्या है? ये वैश्य वृत्ति नहीं तो क्या है? अगर ब्राह्मण बन करके, वो वैश्यवृत्ति रखने लगे तो वो वैश्य वर्ण में ही चला जाता है। या उसके आगे का जन्म उसी अनुसार वह फाइनल कर लेता है। इसी तरह अगर व्यक्ति के अंदर युद्ध करने की या संघर्ष, सबके साथ युद्ध में बार-बार आ जाता है, तो वह क्षत्रियों के गुण उसके जीवन में आ गये। इस प्रकार के गुण स्वाभाविक रीति से व्यक्ति को उसी वर्ण के अंदर ले जाता है।